UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 9 मेघ बजे, फूले कदम्ब (मंजरी)

समस्त पद्याशों की व्याख्या

मेघ बजे

धिन-धिन-धा .... धिन-धिन-धा....।

संदर्भः
प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'मेघ बजे, फूले कदम्ब' नामक कविता से उद्धत की गई हैं। इसके रचयिता वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' हैं।

प्रसंगः
प्रस्तुत कविता में कवि ने बादलों की उमड़-घुमड़ एवं उनकी ध्वनि का मार्मिक चित्रण किया है।

व्याख्याः
धिन-धिन-धा और धमक-धमक के साथ बादल गर्जना करने लगे। बादलों में बिजली चमक ली। बादलों की गर्जना हुई, मेंढक ने बोलना शुरू कर दिया। धरती का ऊपरी तले पानी से धुल गया। कीचड़ भी चंदन समान लग रहा है क्योंकि पानी बरसने से जमीन जोतने योग्य हो गई। इस कार हुल का स्वागत होने लगा। बादल धिन-धिन करके गर्जना करने लगे।

फूले कदम्ब......................... फूले कदम्ब।

संदर्भः
पूर्ववत् ।

प्रसंगः
अवि ने सावन में फैली हरियाली तथा फूले हुए कदम्ब का सजीव चित्रण किया है।

व्याश्याः
सावन के महीने में कदम्ब फूल आ जाते हैं। उनकी प्रत्येक टहनी पर गेंद के समान वह अब भी बरस रहा है। ललचाई आँखों से पपीहा स्वाति नक्षत्र की बूंद के लिए तरस रहा है। मेरा मन कहता है कि कदम्ब पर बैठ जाऊँ। कदम्ब फूले हुए हैं।

https://www.evidyarthi.in/